जिला स्तरीय सेमिनार– प्रारम्भिक कक्षाओं में प्रभावी शैक्षणिक प्रक्रियाएं

प्रस्तावनाः– शिक्षा जगत में अपनी शिक्षण यात्रा के अनुभवों को साझा करने की प्रक्रिया बेहद अहम एवं प्रभावी रही है। अनुभवों का साझा करने की यह प्रक्रिया जहां अन्य शिक्षकों को उनके मन में चलने वाली कल्पनाओं को विचारों के धरातल से कार्यक्षेत्र में क्रियान्वित करने की पहल तक मदद करती है वहीं अनुभवों को साझा करने वाले शिक्षकों खुद के कार्य का भी स्वआकलन करने का मौका प्रदान करती है। वैश्विक महामारी कोविड–19 के कारण हुए अधिगम क्षतिपूर्ति को पाटने के लिए वर्तमान अकादमिक सत्र में विद्यासेतु–2 पाठ्यक्रम के साथ–साथ, उल्लेखनीय कार्य एवं अनेक प्रभावी प्रक्रियाओं को जनपद के शिक्षक अपने–अपने विद्यालय में कर रहे हैं। इस वर्ष अक्टूबर माह में राज्य स्तर पर ऐसे ही कुछ प्रधानाध्यापकों के अनुभवों एवं प्रक्रियाओं को साझा करने हेतु सीमेट के साथ मिलकर फ़ाउंडेशन द्वारा एक सेमिनार आयोजित किया गया था जिसमें चमोली जनपद से भी 5 शिक्षक साथियों ने अपने अनुभवों को इसमें साझा किया था। उनके अनुभवों को चमोली जनपद के अन्य शिक्षक साथियों तक भी कैसे पहुंचाया जाए इस विचार को ध्यान में रखते हुए जिला स्तर पर इस सेमिनार को क्रियान्वित करने का प्रयास किया गया। इसी पहल में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान गौचर, चमोली तथा अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन द्वारा संयुक्त रूप से जिला स्तरीय सेमिनार का आयोजन दिनांक 29–11–2023 को किया गया, जिसमें जनपद के 9 शिक्षकों द्वारा अपने प्रभावी शैक्षणिक प्रयासों को 33 अन्य शिक्षकों के साथ साझा किया गया।

कार्यक्रम की आवश्यकता एवं अभिकल्पनः–

सेमिनार में प्रक्रियाओं को मुख्यतः दो भागों में देखा जा सकता है एक हिस्सा है जहां शिक्षक साथियों के साथ मिलकर इस सेमिनार की तैयारी की गयी और दूसरा हिस्सा है जहां शिक्षक साथियों द्वारा अपने पर्चों को प्रस्तुत किया गया। पूर्व तैयारी के तौर पर शिक्षक साथियों से थीम के चुनाव को लेकर दूरभाष संवाद किया गया, जिस थीम को लेकर शिक्षक साथियों ने सहमति दर्ज की। फिर उन प्रक्रियाओं को देखने, समझने और उस विषय पर विस्तार से अनुभव के लिए स्कूल विजिट की गयी। विषय के चुनाव के बाद शिक्षक साथियों द्वारा पर्चा लेखन पर काम कर उसे टीम के साथ साझा किया गया। इसके बाद टीम द्वारा मिलकर इन पर्चों पर फीडबैक तथा संसोधन किए गए। आर्टिकल लेखन के बाद शिक्षक साथियों के साथ एक ऑनलाइन मीटिंग भी की गयी। जिसमें इस सेमिनार की पूरी रूपरेखा को उनके साथ साझा किया गया। कौन साथी प्रस्तुतकर्ता की भूमिका निभाएंगे, कौन साथी मंच संचालन करेंगे और इस दौरान हमें किन बातों को ध्यान में रखना होगा, इन सभी महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर बात की गयी थी। प्रस्तुतीकरण वाले दिन कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 10:15 मिनट पर शुरू हो गयी थी। कार्यक्रम की पूरी रूपरेखा को अलग–अलग चरणों में पहले से ही विभाजित कर दिया गया था। इस सेमिनार में शिक्षक साथियों की 4 भूमिकाएँ बनाई गयी थी– प्रस्तुतकर्ता, पैनलिस्ट, सुलभकर्ता एवं श्रोता। एक शिक्षक जो अपने विद्यालय की प्रक्रियाओं को साझा कर रहे हैं, उन्हें शिक्षक ही बेहतर तरीके से समझ सकते हैं, क्योंकि वे भी उसी प्रकार की परिस्थितियों में कार्य कर रहे और अनुभव कर रहे हैं। इसलिए वे बेहतर तरीके से पेनलिस्ट की भूमिका को निभा सकते हैं। इसी विचार के साथ इस पूरे ताने बाने को बुना गया था। शिक्षक साथियों द्वारा जब क्रम से अपने पर्चे साझा किए गए उस पर पेनलिस्टों ने भी अपने राय और सुझाव दिये।

कार्यक्रम का क्रियान्वयन

प्रस्तुतीकरण

अनीता कुँवर (रा0प्रा0वि0 नौटी– कर्णप्रयाग)– पढ़ने का कोना–पड़ने–लिखने की प्रकिया को प्रभावी बनाना– हमारे विद्यालय में बच्चों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए अनेक प्रक्रियाओं का संचालन किया जाता है। जैसे प्रार्थना सभा, बाल सभा, प्रतिभा दिवस, सांयकालीन सभा, उपचारात्मक शिक्षण, बाल शोध मेला, पढ़ने का कोना, सामुदायिक सहभागिता, क्रीडा प्रतियोगिताएं, सपनों की उड़ान, राष्ट्रीय पर्व और प्रवेश महोत्सव आदि। इन सब में हमारे विद्यालय की सबसे प्रभावी थीम है, पढ़ने का कोना – हमारे बच्चे स्वतंत्र पाठक बन सके, इसके लिए पढ़ने के कोने का प्रभावी उपयोग कैसे करें,यह इस थीम पर काम करने की मुख्य वजह थी। कोविड–19 के बाद बच्चों में पढ़ने को लेकर रुचि नहीं थी। किंतु कुछ नया सीखने और करने को लेकर उनमें काफी उत्साह था। इसलिए मेरे मन में विचार आया कि बच्चों को सीखने के लिए कक्षा–कक्ष की गतिविधियों के अतिरिक्त कुछ और काम करने की जरूरत है। जिसके लिए पढ़ने का कोना एक अच्छा माध्यम हो सका। मैं विद्यालय में एकल शिक्षक के रूप में कार्य कर रही थी, इसके लिए मैंने कुछ उद्देश्यों पर फोकस किया। जिससे बच्चों में पढ़ने के प्रति उत्सुकता और वातावरण का निर्माण किया जा सके।

मैम ने अपनी प्रस्तुति के दौरान किताबों के अस्पताल का जिक्र भी किया। उन्होंने एक बॉक्स बनाया हुआ था जिसमें जिल्द–कवर, टेप, फेविकोल, ग्ल्यू स्टिक, स्टेप्लर इत्यादि चीजें रखी गयी थी। इस बॉक्स को उन्होंने नाम दिया था **''किताबों का अस्पताल''** जैसे इन्सानों की तबीयत खराब होने पर उन्हें अस्पताल में इलाज के लिए ले जाया जाता है ठीक उसी प्रकार किताबों एवं कॉपियों के फट जाने पर उन्हें जिल्द ,टेप तथा फेविकोल की मदद से ठीक किया जा सकता है तो इस सामग्री को जिस डिब्बे में रखा गया है उसे किताबों का अस्पताल कहा जा रहा है। इसके साथ ही मैम ने बच्चों को अस्पताल के निशान के बारे में भी बच्चों को जानकारी दी। मैम के इस विचार को सभी ने बहुत सराहा तथा अपने विद्यालय में अपनाने की बात भी की है।

कुँवर सिंह गड़िया प्रधानाध्यापक (रा0प्रा0वि0व्यारा दशोली)–एफ.एल.एन. और आंकलन के जरिए शैक्षणिक प्रकिया को प्रभावी बनाना– पिछले साल हमने बुनियादी भाषा एवं साक्षरता ज्ञान प्रशिक्षण में प्रतिभाग किया था। यूं तो हम अपने स्कूल में विभिन्न प्रक्रियाओं के जरिये बच्चों में भाषा एवं गणित की बुनियादी दक्षताओं के लिए अलग–अलग तरह से काम कर रहे थे। मगर प्रशिक्षण से लौटने के बाद महसूस हुआ कि इसे काम के साथ–साथ नियमित तौर पर बच्चों के आंकलन को लेकर भी योजना बनानी होगी। इसके लिए सबसे पहले मैंने अपने सहायक शिक्षक के साथ मिलकर योजना को साझा किया। इस पर उनकी भी राय ली गयी। हमने पहले बच्चों का आंकलन कर ये जानने की कोशिश की कि वे किस

स्तर पर हैं और सीखने के लिए उनके साथ किस तरह का काम किया जाना है। उस वक्त बच्चे भाषा और गाणित के कौशलों के निचले स्तर पर थे। कक्षा 1 के 2 बच्चे सरल शब्द तो पढ़ रहे थे, मगर वर्ण ज्ञान और ध्वनि पहचान में गड़बड़ी कर रहे थे। इसी तरह कक्षा 3 में चार बच्चों में सिर्फ एक ही धाराप्रवाह पढ़ने में सक्षम था। हमने तय किया कि इस योजना में समुदाय को भी शामिल किया जाए। क्योंकि समुदाय की सहभागिता विशेष दिनों के आयोजन में तो रहती ही है, मगर अपने बच्चों की पढ़ने–लिखने की प्रगति को लेकर हो रही बैठक या फिर योजना में उनकी भागीदारी कम ही देखने को मिलती है। इसलिए हमने तय किया कि हर माह एसएमसी की होने वाली बैठक में हम बच्चों की प्रगति को लेकर भी उनसे संवाद करेंगे और उनके माध्यम से क्या और बेहतर हो सकता है, इस पर उनकी राय भी लेंगे। एफ़एलएन को पाने के लिए हमारे द्वारा कुछ प्रयास इस तरह से किए गए। **एफ़एलएन में कक्षा 1 से 3 तक के लिए बच्चों के लिए लक्ष्य है, मगर हमारे पास कक्षा 4 और 5 तक के बच्चे भी ऐसे हैं, जो अभी एफ़एलएन लेवल पर भी नहीं हैं। हम इन कक्षाओं के बच्चों के लिए भी गतिविधि प्लान करते हैं और उनका भी आंकलन करते हैं।**

बबली सेंजवाल (राजकीय प्राथमिक गैरसैंण)–विद्यालय में नामांकन वृद्धि के प्रयास– मेरा विद्यालय नगरक्षेत्र का विद्यालय है। यहां पर 1 किलोमीटर के दायरे में सात गैर सरकारी विद्यालय हैं। मैंने 19 दिसंबर 2016 में यहां पर प्रधानाध्यापिका के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। मार्च 2017 में कक्षा पाँचवी के जाने पश्चात् विद्यालय में मात्र 14 छात्र संख्या रह गई थी जो हमारे लिए एक बहुत बड़ी चुनौती थी। विद्यालय में हम मात्र दो शिक्षक थे। मेरे साथी शिक्षक श्री चंद्र सिंह नेगी ने भी 24 दिसंबर 2016 को ही कार्यभार ग्रहण किया था। तब विद्यालय की स्थिति बहुत कठिन दौर से गुजर रही थी। जब मैंने विद्यालय में कार्यभार ग्रहण किया तब एक सप्ताह तक कोई भी कार्य न कर सकी। समझ में नहीं आ रहा था कि कहां से काम शुरू किया जाए। मेरा मानना है कि विद्यालय परिसर स्वच्छ एवं सुन्दर होना चाहिए। परिसर ऐसा हो जहाँ बच्चों को अच्छा महसूस हो इसके लिए फुलवारी, दीवार की पेंटिंग, स्कूल परिसर को बेहतर बनाना बहुत जरुरी लगता है। इस विद्यालय में प्रधानाध्यापिका के पद पर योगदान देने के बाद इसे प्राथमिकता से देखा और चरणबद्ध इस पर काम किया गया। इसमें सहयोगी शिक्षक, समुदाय, विभाग के सहयोग से काफी परिवर्तन आया। हमारी छात्र संख्या काफी बढ़ गई है।

पेनलिस्ट द्वारा दिया गया सुझावः सुझाव के तौर पर तकनीकी का भी उपयोग कीजिएगा इससे आपके बच्चे कम्प्यूटर और इंग्लिश में और बेहतर पाएंगे। इसके लिए मैं भी आपका सहयोग करने के लिए तैयार हूँ।

मदन लाल कपरवाल (रा0उ0प्रा0वि0 हरमनी–दशोली)–पढ़ने–लिखने से जोड़ने के लिए सुबह की सभा का इस्तेमाल– विद्यालय में बतौर प्रधानाध्यापक कई तरह की ज़िम्मेदारी रहती हैं। इसमें अकादमिक पक्ष पर काम करने के साथ ही विद्यालय की अन्य समस्त व्यवस्था को सुदृढ़ करना भी है। अपने स्कूल में अपने सहयोगी शिक्षकों की मदद से हमने इन ज़िम्मेदारी को साथ निभाने की कोशिश जारी है। जैसा कि हम जानते है कि स्कूल में कई तरह की प्रक्रियाएं यदि बेहतर तरीके से संचालित की जाती है तो, उसका असर साफ तौर पर बच्चों पर दिखाई देता है। शिक्षण कार्य शुरू करने से पूर्व सभी विद्यालयों में सुबह की

प्रार्थना सभा का आयोजन किया जाता है। जिससे छात्रों में एक नवीन सृजनात्मक कौशल का विकास होता है। कोविड के बाद से सुबह की सभा का व्यवस्थित तरीके से संचालन नहीं हो पा रहा था। इसकी वजह से विद्यार्थी काफी नीरसता के साथ इसमें प्रतिभाग करते थे। इसके बाद हमने योजनाबद्ध तरीके से सुबह की सभा का संचालन करने की सोची। इसी वजह से मैंने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर इन स्कूल की प्रोसैस को मजबूत करने पर ध्यान दिया। जैसे सुबह की सभा, खेल की गतिविधि पर पढ़ाई के साथ–साथ योजनाबद्ध तरीके से काम किया। आज इसका असर बच्चों पर भी दिखाई देता है।

प्रश्न– आप जूनियर में है आपके यहाँ विषय भी बंटे हुए हैं। फिर आप सुबह कि सभा कैसे मैनेज करते हैं?

हम लोगों ने पढ़ने लिखने से जुड़ती हुई प्रक्रियाओं को इसलिए शामिल किया है कि सारी चीज़ें सुबह की सभा में हो जाए। इसके लिए प्रार्थना सभा के बाद टाइम टेबल में हमने व्यायाम का ही पीरियड रखा है जिससे सारी चीजें मेनेज हो जाती हैं।

रमेश चंद्र निराला प्रधानाध्यापक (रा0प्रा0वि0 छिड़िया –गैरसैंण) –सामुदायिक सहभागिता का विद्यालय में बेहतर कियान्वयन– विद्यालय और पढ़ाई के केंद्र में है हमार विद्यार्थी। हमारा बच्चा कैसे बेहतर सीखे इसके लिए कई तरह की प्रक्रिया हम सभी शिक्षक करते हैं। हमने अपने स्कूल में सीखने सिखाने के लिए बेहतर माहौल बनाने के लिए समुदाय सहभागिता को विशेष तौर पर शामिल किया। हमारा बच्चा जिस भी समुदाय से आता है, उनका ये भरोसा कि हम बच्चों के लिए बेहतर प्रयास कर रहे हैं, बेहद जरूरी है। हमारे और समुदाय के बेहतर प्रयास से हम विद्यार्थी के लिए एक आदर्श माहौल तैयार कर सकते हैं। इसके लिए समुदाय को कैसे विद्यालय के साथ जोड़ें उसके लिए हमारे स्कूल प्रबंधन ने इन बातों को बहुत गहराई से समझा जैसे समुदाय में शिक्षकों के प्रति विश्वास जमाना, खुद शिक्षकों को विद्यालय के कार्यों में जुड़ाव रखना ताकि समुदाय स्वयं भी जुड़ने को तैयार हो, समुदाय के लोगों को सम्मान देना समुदाय को विद्यालय के कार्यों को करने में खुली छूट प्रदान करना, समुदाय के साथ–साथ जनप्रतिनिधियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं को विद्यालयी कार्यों में जोड़ना तथा समुदाय को पत्र के माध्यम से विद्यालय कार्यक्रमों में आमंत्रित करना।

प्रश्न– समुदाय सहभागिता का बच्चों के सीखने में क्या असर पड़ा?

समुदाय जब जुड़ता है तो कई चीज़ें आसान हो जाती है। हमने अभिभावकों के ग्रुप में ऐसे लोगों को भी जोड़ा है जो पढ़े लिखे हैं। वे बच्चों को उनके होमवर्क करवाने में मदद करते हैं।

सीमा नौटियाल (रा0प्रा0वि0 गाड़ी– दशोली) शिक्षण सामग्री के द्वारा प्रभावी शिक्षण– – वह सामग्री जो शिक्षण को सरल, रुचिकर, सुगम, आकर्षित हदयग्राही एवं बोधगम्य बनाती है, उसे अभी के संदर्भ में टी.एल.एम. कहते हैं। शिक्षण अधिगम सामग्री शिक्षण को ध्यान में रखकर बनाई जाती है। अधिगम शिक्षण सामग्री छात्रों को विषय को स्वयं समझने में मदद करने के लिए तैयार की जाती है, जबकि शिक्षण अधिगम सामग्री उन्हें विभिन्न शिक्षा तकनीकों के माध्यम से बेहतर बनाने का प्रयास करती हैं। जो अभी बाज़ार में कई तरह की शिक्षण सामग्री उपलब्ध हैं। मगर मैंने खुद से या फिर बच्चों की मदद से बेकार पड़े कार्ड बोर्ड,

मिठाई के डिब्बे, गिफ्ट पैक, शादी के कार्ड या फिर कपड़े की मदद से ये सामग्री तैयार की। इससे एक तो वस्तुओं के सही उपयोग की समझ बच्चों में उत्पन्न हुई और दूसरा इससे उनमें खुद से सृजन करने का हुनर भी विकसित हुआ।

मैम बहुत सारे टी.एल.एम. को अपने साथ लेकर भी आई थी और गिनती की समझ, वर्णों की पहचान तथा शब्द निर्माण संबन्धित एलटीएम पर कैसे काम किया जाता है इसका प्रस्तुतीकरण भी वहाँ पर किया गया।

सीमा शर्मा (रा0प्रा0वि0 गॉवली गैरसैंण) अंग्रेजी शिक्षण हेतु अनुकूल वातावरण का निर्माण – जैसा कि हम सभी जानते है अंग्रेजी भाषा हम सभी के लिए एक विदेशी भाषा है, तथा कहीं ना कहीं हमारे घर में या समाज में अंग्रेजी भाषा को लेकर उस तरह वातावरण नहीं दिखता है। इस लिहाज से हमारे स्कूल में बच्चों को एक अनुकूल वातावरण प्रदान किया जाना चाहिए ताकि अंग्रेजी भाषा को लेकर बच्चों की आधारभूत आवश्यकताएं पूरी हो सकें। बच्चों की आवश्यकता को देखते हुए मेरे द्वारा बच्चों के विकास के लिए विभिन्न प्रयास किये गए, जैसे कक्षा– कक्ष में अंग्रेजी सीखने का वातावरण तैयार किया गया, प्रार्थना सभा में बच्चसें को अंग्रेजी में बोलने के विभिन्न प्रकार के अवसर प्रदान किये गये, तथा टी.एल.एम. के माध्यम से शिक्षण कार्य किया गया; इस तरह के प्रयासों से बच्चों के स्तर में सुधार देखने को मिला, जो कि मेरे लिए प्रोत्साहित करने वाली बात थी। इसके अलावा मेरे द्वारा बच्चों के स्तर में सुधार देखने को मिला, जो कि मेरे लिए प्रोत्साहित करने वाली बात थी, इसके अलावा मेरे द्वारा बच्चों के साथ सामान्य बातचीत के दौरान अंग्रेजी के साधारण शब्दों और वाक्यों का इस्तेमाल किया गया, जिस कारण बच्चों में अंग्रेजी को लेकर भय कम हुआ और वह सहज हो पाए।

प्रश्न– अंग्रेजी को लेकर आपने घर में कैसे माहौल बनाया क्योंकि ग्रामीण पृष्ठभूमि में लोग हिन्दी भाषा के लिए ही सजग नहीं है फिर अंग्रेजी में और दिक्कत उन्हें महसूस होती है।

मैंने इसके लिए बात की है कि बच्चे जो भी स्कूल में पढ़े उसे जरूर घर वालों के सामने भी पढ़ें। इसे वे अपने भाई बहन को भी सुना सकते हैं उनसे पूछ सकते हैं। मुझे ये जानकर अच्छा लगा एक बच्चे ने कहा कि मैम मैंने अपने भाई के कुछ पूछा और उसकी अंग्रेजी मेरे भाई को नहीं आई फिर मैंने उसे बताया। इसी के साथ घर के समान की लिस्ट बनाना और उसे बनाने में घर वाले भी मदद करते हैं।

विकास चंद्र कोठियाल (रा0उच्च0प्रा0वि0 बैनोली) स्कूल में नामांकन बढ़ाने के लिए प्रभावी प्रक्रिया पर काम – हमारे विद्यालय में बच्चों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए अनेकों प्रक्रियाओं को संचालित किया जाता है। जैसे– प्रार्थना सभा में बच्चों की सक्रिय प्रतिभागिता, साप्ताहिक रूप से बालसभा का आयोजन, साँय कालीन (उपचारत्मक शिक्षण) कक्षाओं का आयोजन, बाल शोध मेला, प्रतिभा दिवस एवं सपनों की उड़ान का आयोजन, अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं तथा सक्रिय सामुदायिक सहभागिता सुनिश्चित करना। इसी के साथ बालिका सुरक्षा एवं हायजीन के लिए भी काम किया जा रहा है। इन गतिविधियों के अतिरिक्त हमारे विद्यालय की सबसे प्रभावी प्रक्रिया है– अतिरिक्त कक्षा शिक्षण जिसके जरिये हमारे

विद्यार्थियों में पढ़ने लिखने की आदत का विकास हुआ है और वे एक स्वतंत्र पाठक के रूप में विकसित हो रहे हैं तथा पढ़ाई के प्रति उनमें उत्साह भी बढ़ा है।

प्रश्न 1– आप ऐसे क्या तरीके अपनाते हैं कि आपका कोर्स समय से पहले पूरा हो जाता हैं?

मैं सत्र की शुरुआत में अपना लक्ष्य निर्धारित कर देता हूँ, और उसके लिए एक योजना का निर्माण अपने विद्यालय के अन्य शिक्षक साथियों की मदद से बनाता हूँ। जिससे पूरे वर्ष का एक खाका मेरे और दूसरे शिक्षकों के मन में होता है जो हमें मदद करता है समय पर अपनी योजना को पूरा करने के लिए।

विनोद कुमार अग्निहोत्री (रा0प्रा0वि0 आली नवीन–पोखरी) प्रिंट रिच द्वारा गणितीय और भाषायी कौशल का विकास– कोविड 19 के बाद छात्र–छात्राओं में पढ़ाई के प्रति अरूचि और उदासीनता देखने को मिली। अधिकांश समय घर में रहने के कारण उन्हें स्कूल के जीवन में ढालना चुनौतीपूर्ण काम था। इसके बाद मैंने इस विषय पर सोचना शुरू किया कि आखिर किन तरीकों से बच्चों को स्कूल आना रोचक लगे। ताकि पढ़ाई में उनकी रुचि भी पैदा हो सके। लॉकडाउन में घर पर खाली समय में मैंने कार्ड बोर्ड, चार्ट आदि की मदद से गणित, भाषा और ईवीएस विषय में खूब सारे टी.एल.एम. और मॉडल का निर्माण किया था। इन्हें मैंने अपने विद्यालय के कक्षाओं में बच्चों की मदद से सजा दिये। इन्हें और आकर्षक बनाने के लिए मैंने इन्हें रंगीन कागज़ से गेंद और पेपर का इस्तेमाल भी किया। हालांकि शुरुआती दिनों में हमें कुछ चुनौती का सामना भी करना पढ़ा।

विनोद अग्निहोत्री विद्यालय में विज्ञान दिवस पर बच्चों के साथ मिलकर प्रदर्शनी का आयोजन करते हैं। प्राथमिक कक्षाओं में इस प्रकार की गतिविधियों को करवाना ही अपने आप में एक अनूठी पहल है। बच्चों के साथ मिलकर मॉडल का निर्माण कर बच्चों की सृजनशीलता के साथ–साथ उनमें एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण को उत्पन्न भी किया जाता है।

सुझाव– आप सहयोगी शिक्षक का भी सहयोग लें।

कुछ उम्दा अनुभवः– मदन कपरवाल जी अपने प्रस्तुति का प्रिंट आउट लेकर आए थे। इस काम को लेकर उनकी संजीदगी दिखती है। सीमा मैम और विकास चन्द्र कोठियाल ने पहले से प्रतिभागियों के पेपर पढ़े थे और कम शब्दों में सटीक राय रखी।

अनीता कुँवर ने अंग्रेजी के पेपर पर भी प्रक्रिया को लेकर अच्छे पॉइंट्स रखे। उन्होंने सीमा मैम के पेपर पर जिस तरह के पॉइंट्स रखे उससे लग रहा था कि वे पहले से पढ़कर आए हैं। शिक्षक जिस तरह से सुझाव या राय रख रहे थे उससे लग रहा था कि वे काफी गहराई से भी शिक्षकों से जुड़े हैं। जैसें कुँवर सिंह गड़िया जी ने सीमा नौटियाल के लिए कहा कि वे एक अभिभावक के तौर पर भी मैम के काम को देखते हैं। कुँवर सिंह गड़िया ने अपनी बात को साझा किया कि उनकी बेटी सीमा नौटियाल की विद्यार्थी है।स्कूल से आने के बाद

वे अपने बेटी से पूछते हैं आज मैम ने तुम्हें कौन सी नयी गतिविधि करवाई है और तुमने क्या नया सीखा है, ये गतिविधि बच्चों के साथ–साथ हमारे लिए भी बहुत मददगार साबित होती हैं। रमेश चन्द्र निराला ने खुले दिल से स्वीकार किया कि रीडिंग कोर्नर वाला विचार वे विनोद अग्निहोत्री जी के काम को देखकर कर पाये।

डायट प्राचार्य सम्बोधनः इस सेमिनार के जरिये हम अपने जनपद के शिक्षकों के बेहतरीन कार्यों को देख पाए हैं, यह पहल बहुत ही अच्छी और सराहनीय है। इस अकादमिक सत्र में डायट चमोली तथा अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के संयुक्त तत्वाधान में यह सेमिनार आयोजित किया गया है। अगले वर्ष ऐसे दो सेमिनार हम प्रस्तावित करेंगे ताकि जनपद के अन्य शिक्षकों के काम को दूसरे शिक्षक साथियों तक पहुंचाया जा सके। राज्य स्तर में भी हमारे जनपद से शिक्षकों ने प्रतिभाग किया था। जिले स्तर पर हम इसे कर पाए हैं तो अब इसे यदि ब्लॉक स्तर पर भी किया जा सके तो अच्छा रहेगा।

समेकनः समेकन के तौर पर, जिन शिक्षक साथियों ने इस सेमिनार में अपने पर्चों पर प्रस्तुति दी थी उन्हें शिक्षकों द्वारा सर्टिफिकेट के माध्यम से सम्मानित किया गया। फिर संदर्भदाता द्वारा सभी शिक्षक प्रस्तुतकर्ता तथा प्रतिभागी शिक्षक साथियों का आभार व्यक्त किया गया तथा अंत में डायट प्राचार्य के सम्बोधन से इस सेमिनार का समापन किया गया।

<u>शैक्षिक महत्व</u>– इस सेमिनार में जनपद के शिक्षकों के नवाचारी कार्यक्रमों एवं गतिविधियों की दूसरे शिक्षकों के साथ साझेदारी की गई। जो शिक्षक अपने अपने कार्यक्षेत्र में जिन नवाचारी गतिविधियों का समावेशन कर रहे हैं, उनकी अन्य शिक्षकों के साथ अपने अनुभव एवं कार्यप्रणाली को साझा किया गया ताकि अन्य शिक्षक भी उन नवाचारी कार्यक्रमों, गतिविधियों को अपनी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अपना सकें।